हिमाचल प्रदेश सरकार

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

वन श्री त्राण, विश्व कल्याण
वन विभाग हिमाचल प्रदेश

संवाद पत्र

अंक 17 | नवंबर 2025

"हरित क्रांति" की ओर वानिकी परियोजना के बढ़ते कदम

आजीविका सुधार व पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में परियोजना हुई मील का पत्थर साबित

जाइका वानिकी परियोजना हिमाचल प्रदेश के ग्रामीणों की आजीविका सुधार के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो रही है। यह परियोजना इस दिशा में वर्श 2018 से बेहतरीन कार्य कर रही है, जो निरंतर जारी है। परियोजना का मुख्य लक्ष्य हिमाचल प्रदेश के चयनित क्षेत्रों में वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं संवर्धन करना, जिससे पर्यावरण एवं सतत सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान मिल सके। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों बिलासपुर, कांगड़ा, किन्नौर, मंडी, लाहौल–स्पीति, शिमला और कुल्लू के 9 वृतों, 22 वन मंडलों और 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। यह परियोजना हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सौजन्य से गठित ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के माध्यम से हिमाचल प्रदेश सोसायटी अधिनियम–2006 के तहत पंजीकृत एक स्वायत्त सोसाइटी द्वारा कार्यान्वित की जा रही है, जिसका नाम हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के रूप में नामित किया गया। इस परियोजना की कुल लागत 800 करोड़ रुपये है और अवधि 10 वर्ष यानी 2018 से 2028 तक है।

परियोजना की मुख्य उपलब्धियां :

जाइका वानिकी परियोजना की मुख्य गतिविधियों पर गौर करें तो अब तक 460 ग्राम वन विकास समितियां और जैव विविधता प्रबंधन उप समितियों का चयन एवं उनका गठन किया गया। इसके लिए 459 सूक्ष्म विकास योजनाएं तैयार की गई। अब तक 908 स्वयं सहायता समूह गठित किए गए, जिनमें से 700 से अधिक स्वयं सहायता समूह पूर्ण रूप से महिला संचालित हैं। परियोजना द्वारा स्वयं सहायता समूहों को अनुदान के रूप में 1–1 लाख रुपये की राशि अपनी आजीविका संवर्धन कार्यों को गति देने के लिए दी गई। स्वयं सहायता समूहों द्वारा अपने व्यावसाय के सुनियोजित तरीके से चलाने के लिए परियोजना के सौजन्य से 885 व्यावसायिक योजनाएं तैयार की गई। ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के लिए परियोजना जागरुकता कार्यशालाएं, कौशल आधारित प्रशिक्षण समय–समय पर आयोजित किए जाते हैं। अब तक 800 से अधिक स्वयं सहायता समूहों को कौशल आधारित गतिविधियों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के माध्यम से परियोजना द्वारा सहभागी वन प्रबंधन एवं विभागीय स्तर पर अब तक 8100 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण किया गया। मुख्यमंत्री वन विस्तार योजना के अंतर्गत प्रदेश में 100 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण किया गया। पौधशाला विकास योजना के तहत परियोजना द्वारा 72 विभागीय पौधशालाओं का सुदृढीकरण किया गया है। चौपाल वन मंडल में परियोजना द्वारा अत्याधुनिक तकनीक से लैस नर्सरी संचालित की गई है, जिससे पौधरोपण एवं संरक्षण का कार्य वैज्ञानिक यांत्रिक तकनीक से किया जा रहा है। जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ द्वारा राज्य के परियोजना क्षेत्रों में औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। स्पीति के अतिदुर्गम क्षेत्र देमुल गांव को जौ की थ्रेशिंग के लिए पायलट आधार पर डीजल संचालित दो थ्रेशिंग मशीनें वितरित की गई। हाल ही में गवर्निंग बॉडी की बैठक में प्रदेश में 140 अतिरिक्त ग्रामीण वन विकास समितियों का गठन करने का निर्णय भी लिया, जिसकी प्रक्रिया अभी जारी है।

श्री श्रेष्ठा नंद (हि.प्र.व.से)

परियोजना निदेशक

एक कदम हरियाली की ओर...

हिमाचल में हरित क्रांति की ओर वानिकी परियोजना के बढ़ते कदम

- **विभागीय और जन सहभागिता के माध्यम से हुए पौधरोपण**
- **मुख्यमंत्री वन विस्तार व राजीव गांधी वन संवर्द्धन योजना में परियोजना निभा रही बेहतरीन भूमिका**

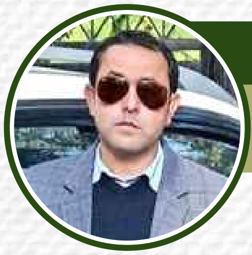

आरपी नेगी
मीडिया स्पेशलिस्ट

हिमाचल प्रदेश में हरित आवरण को बढ़ाने के लिए जाइका वानिकी परियोजना के कदम हर साल बढ़ते जा रहे हैं। इस बार के मॉनसून सीजन के दौरान जाइका वानिकी परियोजना ने राज्य में पौधेरापेण अभियान सफलतापूर्वक चलाई गई। प्रदेश के मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविद्र सिंह सुक्खू ने 14 अगस्त 2025 को राज्य स्तरीय वन महोत्सव का आगाज किया। इस अवसर पर उन्होंने केंद्रीय आलू शोध संस्थान कनलोग परिसर में पौधरोपण कर राजीव गांधी वन संवर्द्धन योजना का भी विधिवत शुभारंभ किया।

हिमाचल प्रदेश में हरित आवरण बढ़ाने के लिए जाइका वानिकी परियोजना 22 वन मंडलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके मद्देनजर हर वर्ष भिन्न–भिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे जा रहे हैं। वित्त वर्ष 2020–21 से लेकर वित्त वर्ष 2024–25 तक 8 हजार 1 सौ हेक्टेयर भूमि पर सफलता पूर्वक पौधरोपण किया गया। जिसका सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहा है। मौजूदा वित्त वर्ष में भी मॉनसून सीजन के दौरान राज्य के भिन्न–भिन्न वन मंडलों में विभागीय और जन सहभागिता के आधार पर पौधे रोपे गए। इस बार वन मंडल धर्मशाला के विभागीय स्तर पर 70 और जन सहभागिता के माध्यम से 70 हेक्टेयर भूमि पर पौधे रोपे गए। यानी कुल मिलाकर 140 हेक्टेयर भूमि पर पौधरोपण किया गया। वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत तरांडा, निगुलसरी और जानी में इस बार दुर्लभ प्रजाति बोझ पत्र के 1500 पौधे रोपे गए। वन मंडल शिमला के अंतर्गत 5 हेक्टेयर भूमि पर विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे गए। जिसमें बुजुर्गों और स्कूली बच्चों ने अपनी भागिदारी निभाते हुए पौधरोपण अभियान को सफल बनाया।

वन मंडल आनी के अंतर्गत जन सहभागिता और विभागीय स्तर पर 10–10 हेक्टेयर भूमि पर पौधे रोपे गए। वन मंडल नूरपुर के अंतर्गत 20 हेक्टेयर भूमि पर विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे गए। इसी तरह से वन मंडल ठियोग के अंतर्गत 4 हेक्टेयर और चौपाल वन मंडल के

अंतर्गत 20 हेक्टेयर भूमि पर जन सहभागिता और विभागीय के माध्यम से पौधरोपण अभियान सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। वन मंडल पार्वति के अंतर्गत 10 हेक्टयेर भूमि पर भिन्न–भिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे गए। 14 अगस्त 2025 को शिमला में आयोजित राज्य स्तरीय वन महोत्सव के अवसर पर मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने जाइका वानिकी परियोजना के चार स्वयं सहायता समूहों को कैपिटल कॉसट के 50–50 हजार रूपये के चैक भेंट किए।

रक्षाबंधन पर नूरपुर में वृक्षाबंधन, बांटे 2500 पौधे

9 अगस्त 2025 को रक्षा बंधन के अवसर पर वन मंडल नूरपुर में वृक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान विभिन्न वन परिक्षेत्रों में 25 सौ पौधे भी बांटे। इसके साथ–साथ वन मंडल नूरपुर में वन महोत्सव के दौरान 20 हेक्टेयर भूमि पर पौधरोपण किया गया। वहीं धर्मशाला वन मंडल धर्मशाला में 140 हेक्टेयर भूमि पर पोधे रोप गए। इसमें 70 हेक्टेयर विभागीय और 70 हेक्टेयर भूमि में जन सहभागिता के अंतर्गत पौधे रोपे गए। वन मंडल शिमला में बैकलॉग के 5 हेक्टेयर भूमि पर पौधरोपण किया गया। इसी तरह वन मंडल ठियोग में 4, चौपाल में 20, आनी में 20 और पार्वति में 10 हेक्टेयर भूमि पर विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे गए। 23 अगस्त 2025 को डीएमयू शिमला के अंतर्गत तारा देवी रेंज की वीएफडीएस पनेश में वृक्षारोपण अभियान आयोजित किया गया। इस अभियान में वीएफडीएस के सदस्य, सरकारी प्राथमिक विद्यालय पनेश के छात्र–छात्राएं एवं स्टाफ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर विद्यालय प्रांगण में पर्यावरण संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को प्रकृति की सुरक्षा और वृक्षारोपण के महत्व के बारे में जानकारी दी गई। यहां देवदार, बान, दाड़ू और रीठा के पौधे रोपे गए।

स्वतंत्रता दिवस पर कुल्लू के पीज में रोपे देवदार के पौधे

15 अगस्त यानी स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जाइका वानिकी परियोजना ने पौधे रोप कर प्रदेश में हरित आवरण बढ़ाने का संकल्प लिया। वन मंडल कुल्लू के अंतर्गत पीज क्षेत्र में पांच हेक्टेयर भूमि पर देवदार के पौधे रोपे गए। प्रोग्राम मैनेजर डा. कौशल्या कपूर की अगुवाई में पौधरोपण कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ। पौधरोपण अभियान में ग्राम वन विकास समिति पीज, स्वयं सहायता समूह जगजननी और वैष्णों पीज के सदस्यों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। राजीव गांधी वन संवर्द्धन योजना से जुड़ी महिलाओं ने भी पौधे रोपकर एक कदम हरियाली की ओर अग्रसर हुई। इस अवसर पर एफटीयू को–ऑर्डिनेटर कुल्लू प्रेमला ठाकुर और एफटीयू को–ऑर्डिनेटर भुट्टी शशिभूषण समेत महिला मंडल और स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने अपने क्षेत्र में हरित क्रांति को बनाए रखने की शपथ भी ली

हिमाचल में पहली बार रोपे भोज पत्र के 1500 पौधे

- **दुर्लभ प्रजाति भोज पत्र को जीवित करने में मिली सफलता**
- **किन्नौर के निचार, तरांडा और जानी में रोपे पांच–पांच सौ पौधे**

हिमाचल प्रदेश में विलुप्त हो रही दुर्लभ प्रजाति भोज पत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना ने पहल शुरू कर दी है। परियोजना ने वर्ष 2024 में हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इंस्टीच्यूट के साथ एमओयू हस्ताक्षर कर जनजातीय क्षेत्रों में भोज पत्र के पौधों की सप्लाई करने के लिए सहमति जताई थी। इसके मद्देनजर इस बार यानी सितंबर 2025 में जिला किन्नौर के तरांडा, जानी और निचार में 500–500 पौधे रोपे गए। कुल मिलाकर इस बार मानसून सीजन के दौरान वन मंडल किन्नौर में भोज पत्र के 15 सौ पोधे रोपे गए। बता दें कि विलुप्त हो रही दुर्लभ प्रजाति के पौधे भोज पत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना को सफलता मिली है। हिमाचल प्रदेश में पहली बार इस प्रजाति के पौधों की नर्सरी तैयार करने से लेकर पौधरोपण तक सफलता मिली है। जाइका वानिकी परियोजना ने हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इन्टीच्यूट शिमला के सहयोग से पहली बार भोज पत्र की नर्सरी तैयार करवाई ताकि इस दुर्लभ प्रजाति एवं सांस्कृतिक पौधों को पुनः रोपित कर उनके प्राकृतिक स्थलों पर पौधरोपण अभियान के माध्यम से लगाया जा सके। इस दिशा में जाइका वानिकी परियोजना बेहतरीन कार्य कर रही है। भोज पत्र की संभावना के मद्देनजर 25 सितंबर 2025 को वन परिक्षेत्र निचार स्थित भावानगर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इन्टीच्यूट शिमला के निदेशक प्रभारी डा. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. पितांबर नेगी और तकनीकी अधिकारी ज्वाला सिंह ने बोझ पत्र के पौधरोपण से लेकर उनके संरक्षण पर विस्तृत जानकारी दी।

---

30 हजार पौधे रोपने का लक्ष्य : डा. काप्टा

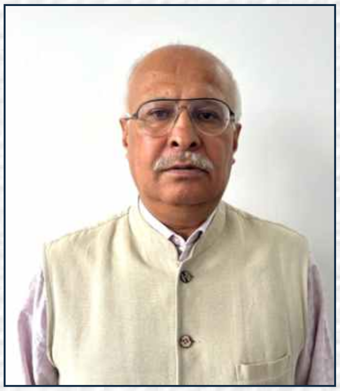

जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी–बूटी सैल के निदेशक डा. एसके काप्टा ने बताया कि आने वाले समय में इस प्रजाति के पौधों को स्पीति, कुल्लू तथा अन्य प्राकृतिक स्थालों पर रोपित किया जाएगा। इस प्रयास के तहत परियोजना ने 30 हजार पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना ने पहली बार जिला किन्नौर में 15 सौ पौधे रोपित कर सफलता हासिल की।

74वें वन्य प्राणी सप्ताह पर वन्य जीवों के संरक्षण का संकल्प

- **पीसीसीएफ वाइल्ड लाइफ श्री अमिताभ गौतम ने किया विधिवत शुभारंभ**
- **स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल–2025 का विमोचन, हिमाचल में 83 बर्फानी तेंदुए**

हिमाचल प्रदेश में 74वें वन्य प्राणी सप्ताह का आगाज 2 अक्तूबर 2025 को हुआ। पीसीसीएफ वाइल्ड लाइफ श्री अमिताभ गौतम ने 2 अक्तूबर 2025 को इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। ह्यूमन–एनिमल को–एक्जिस्टेंस यानी मानव–जंतु सह अस्तित्व विषय पर आधारित वन्य प्राणी सप्ताह का शुभारंभ करते हुए उन्होंने विडिया कांफ्रेंस के माध्यम से 2 से 8 अक्तूबर यानी सात दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम के बारे प्रदेश के सभी वन्य प्राणी मंडलों के अधिकारियों के साथ विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर प्रदेश में वन्य जीवों के संरक्षण का संकल्प लिया। अमिताभ गौतम ने कहा कि आज के समय में बहुत सी वन्य प्रजातियां लुप्त होती जा रही हैं जिन्हें बचाने के लिए वन विभाग एवं वन्य प्राणी विंग महत्वपूर्ण कदम उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वन्य जीवों के संरक्षण के लिए विभाग के साथ–साथ आम जनमानस को आगे आने की जरूरत है।

अमिताभ गौतम ने कहा कि वन्य प्राणी प्रभाग हिमाचल प्रदेश ने नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन बैंगलूरू के साथ मिलकर स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के माध्यम से हिमाचल के 26 हजार 112 वर्ग किलोमीटर फैले क्षेत्र पर बर्फानी तेंदुए की संख्या के बारे रिपोर्ट प्रकाशित की गई। उन्होंने कहा कि इस रिपोर्ट के मुताबिक हिमाचल में लगभग 83 बर्फानी तेंदुए मौजूद हैं। जो कि वर्ष 2021 में प्रकाशित रिपोर्ट से अधिक हैं। इस अध्ययन में हिमाचल में पहली बार दो नई वण्य प्रजातियों का पता चला है, जो कि वूल्ली फ्लाइंग सुकेर्ल (woolly flying squirrel) और पल्लास कैट ;च्ंससें बंजद्ध है। अमिताभ गौतम ने कहा कि वण्य जीवों के संरक्षण के लिए विभाग के साथ–साथ स्थानीय लोगों को मिलकर कार्य करने का आहवाहन किया। उन्होंने विडियो कांफ्रेंस के माध्यम से जुड़े सभी अधिकारियों व स्थानीय लोगों से आग्रह किया कि वण्यप्राणी सप्ताह के माध्यम से आम जनमानस तक वण्य जीवों के संरक्षण का संदेश पहुंचाया जाए।

प्रोग्राम मैनेजर नेचर कन्जर्वेशन फाउंडेशन बैंगलुरू दीपशिखा ने हिमाचल में बर्फानी तेंदुए के संरक्षण और उनकी स्थिति के बारे विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर सीएफ वाइल्डलाइफ श्रीमति प्रिति भंडारी, डीएफओ वाइल्डलाइफ शिमला डा. शाह नवाज भट्ट, डीएफओ हैड क्वार्टर श्रीमति अनीता भारद्वाज, जाइका वानिकी परियोजना के परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नंद शर्मा, एसीएफ वाइल्डलाइफ श्री विनोद रंटा समेत जाइका वानिकी परियोजना के अधिकारी एवं कर्मचारी भी मौजूद रहे। गौरतलब है कि हर वर्ष गांधी जयंति के उपलक्ष्य पर 2 अक्तूबर को वन्य प्राणी सप्ताह का शुभारंभ होता है, जिसका समापन्न 8 अक्तूबर को किया जाता है।

स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल-2025 का विमोचन

पीसीसीएफ वाइल्डलाइफ श्री अमिताभ गौतम ने स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल प्रदेश–2025 पुस्तिका का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में बर्फानी तेंदुए विलुप्त होते जा रहे हैं, जिन्हें बचाने एवं संरक्षण के लिए वाइल्डलाइफ विंग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि हाल ही में हिमाचल प्रदेश का शीत मरूस्थल क्षेत्र स्पीति युनेस्को के मैन एंड बायोस्फेयर रिजर्व (UNESCO's MAB Network) में शामिल हुआ है, जो हिमाचल के लिए हर्श का विशय है।

जाइका वानिकी परियोजना ने दिया
स्वच्छ हिमाचल, सुरक्षित हिमाचल का संदेश

गांधी जयंती के अवसर पर 2 अक्तूबर 2025 को जाइका वानिकी परियोजना ने विशेष सफाई अभियान चलाया। वीरवार को परियोजना परिसर टुटू सहित आसपास के क्षेत्र में सफाई कर स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाया। मुख्य परियोजना निदेशक एवं पीसीसीएफ वाइल्डलाइफ अमिताभ गौतम ने झाड़ू चलाया और स्वच्छ हिमाचल, सुरक्षित हिमाचल का संदेश दिया। परियोजना के अधिकारियों और कर्मचारियों ने सफाई अभियान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए क्षेत्र को स्वच्छ व सुंदर बनाने का संकल्प लिया।

गौरतलब है कि हर वर्ष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म दिवस के अवसर पर समूचे भारत में सफाई अभियान का आयोजन किया जाता है। सीएफ वाइल्डलाइफ प्रिति भंडारी, परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नंद शर्मा, डीएफओ वाइल्डलाइफ शिमला शाह नवाज, एसीएफ वाइल्डलाइफ शिमला विनोद कुमार, प्रोग्राम मैनेजर्स, सब्जेक्ट मैटर स्पेशलिस्ट समेत सभी कर्मचारियों ने इस अभियान को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुख्य परियोजना निदेशक अमिताभ गौतम ने इस अभियान में भाग लेने के लिए समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पीठ भी थपथपाई।

शिमला फ्लाइंग फेस्टिवल में महकी रसायन मुक्त उत्पादों की खुशबू

राजधानी के समीप जुन्गा में चार दिवसीय शिमला फ्लाइंग फेस्टिवल एवं हॉस्पिटैलिटी एक्सपो–2025 के दौरान रसायन मुक्त उत्पादों की खुशबू खूब महकने लगी। बता दें कि 25 से 28 अक्तूबर तक चलने वाले इस फेस्टिवल में जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े स्वयं सहायता समूहों के प्राकृतिक उत्पादों की प्रदर्शनी और बिक्री हुई। लोगों ने जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों की सराहना की। जाइका वानिकी परियोजना के परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नंद शर्मा ने कहा कि आज हम लोग मिलेट्स के उपयोग को बढ़ावा दे रहे हैं ताकि हमारा स्वास्थ्य ठीक रहे। रसायन प्रयोग से बेशक उत्पादन बढ़ता है, परन्तु उनके नुकसान भी बहुत हैं। इसलिए प्राकृतिक उत्पादों का अधिक से अधिक उत्पादन करने की आवश्यकता है।

इसके साथ–साथ लोगों की आजीविका में सुधार होगा और उनकी आर्थिकी भी मजबूत होगी। श्रेष्ठा नंद शर्मा ने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की आजीविका में सुधार लाने के लिए वर्ष 2018 से बेहतरीन कार्य कर रही है, जो निरंतर जारी है।

मीडिया में जाइका वानिकी परियोजना

हिमाचल

दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़, शुक्रवार, 26 सितंबर, 2025

दुर्लभ प्रजाति भोजपत्र को जिंदा करने में मिली सफलता

हिमाचल में पहली बार जाइका ने रोपे भोजपत्र के 1500 पौधे

शिमला, 25 सितंबर (हप्र)

हिमाचल प्रदेश में विलुप्त हो रहे दुर्लभ प्रजाति के पौधे भोजपत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना को सफलता मिली है। हिमाचल प्रदेश में पहली बार इस प्रजाति के पौधों की नर्सरी तैयार करने से लेकर पौधारोपण तक सफलता मिली है। जाइका वानिकी परियोजना ने हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला के सहयोग से पहली बार भोजपत्र की नर्सरी तैयार करवाई है ताकि इस दुर्लभ प्रजाति एवं सांस्कृतिक पौधों को पुनः रोपित कर उनके प्राकृतिक स्थलों पर पौधरोपण अभियान के माध्यम से लगाया जा सके। इस दिशा में जाइका वानिकी परियोजना बेहतरीन कार्य कर रही है। भोजपत्र की संभावनाओं को देखते हुए जिला किन्नौर में पहली बार 15 सौ पौधे रोपे गए। वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत तरांडा, निगुलसरी और जानी में क्रमशः पांच सौ-पांच सौ पौधे भोजपत्र के रोपे गए। भोजपत्र की संभावना के मद्देनजर बृहस्पतिवार को वन परिक्षेत्र निचार स्थित भावानगर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला के निदेशक प्रभारी डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पितांबर नेगी और तकनीकी अधिकारी ज्वाला सिंह ने भोजपत्र के पौधारोपण से लेकर उनके संरक्षण पर विस्तृत जानकारी दी।

किन्नौर के निचार, तरांडा और जानी में रोपे पांच-पांच सौ पौधे

प्रदेश में 30 हजार पौधे रोपने का लक्ष्य

जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी-बूटी सैल के निदेशक डा. एसके काप्टा ने बताया कि आने वाले समय में इस प्रजाति के पौधों को स्पीति, कुल्लू तथा अन्य प्राकृतिक स्थलों पर रोपित किया जाएगा। इस प्रयास के तहत परियोजना ने 30 हजार पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना ने पहली बार जिला किन्नौर में 15 सौ पौधे रोपित कर सफलता हासिल की है।

शिमला फ्लाइंग फेस्टिवल में महकी रसायन मुक्त उत्पादों की खुशबू

इंडिया न्यूज

शिमला। राजधानी के समीप जुन्गा में चार दिवसीय शिमला फ्लाइंग फेस्टिवल एवं हॉस्पिटैलिटी एक्सपो-2025 के दौरान रसायन मुक्त उत्पादों की खुशबू खूब महकने लगी। बता दें कि 25 से 28 अक्तूबर तक चलने वाले इस फेस्टिवल में जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े स्वयं सहायता समूहों के प्राकृतिक उत्पादों की प्रदर्शनी और बिक्री हो रही है। सोमवार को जाइका वानिकी परियोजना के उत्पाद खरीदने के लिए असंख्य लोग स्टॉल पर पहुंचे और जमकर खरीददारी की। उन्होंने जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों की सराहना की। इस अवसर पर जाइका वानिकी परियोजना के परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नंद शर्मा भी मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि आज हम लोग मिलेट्स के उपयोग को बढ़ावा दे रहे हैं ताकि हमारा स्वास्थ्य ठीक रहे। रसायन प्रयोग से बेशक उत्पादन बढ़ता है, परन्तु उनके नुकसान भी बहुत हैं। इसलिए प्राकृतिक उत्पादों का अधिक से अधिक उत्पादन करने की आवश्यकता है। इसके साथ-साथ लोगों की आजीविका में सुधार होगा और उनकी आर्थिकी भी मजबूत होगी। श्रेष्ठा नंद शर्मा ने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की आजीविका में सुधार लाने के लिए वर्ष 2018 से बेहतरीन कार्य कर रही है, जो निरंतर जारी है।

चुल्ली तेल और हैंडलूम प्रोडक्ट्स की अधिक बिक्री

शिमला फ्लाइंग फेस्टिवल के दौरान चुल्ली का तेल और हैंडलूम प्रोडक्ट्स की अधिक बिक्री हो रही है। इसके अलावा अखरोट, कोदे का आटा, पाइन नीडल प्रोडक्ट्स, किन्नौरी राजमाह, किन्नौरी टोपी और हाफ जैकेट्स, ओगला और चुल्ली की बिक्री भी हो रही है। पिछले वर्ष की भांति इस बार भी पारंपरिक उत्पाद लोगों की पहली पसंद बन गई है।

हिमाचल

दैनिक भास्कर, शिमला, शुक्रवार 26 सितंबर, 2025 02

दुर्लभ प्रजाति को जिंदा करने में मिली सफलताः किन्नौर के निचार, तरांडा और जानी में लगाए पांच-पांच सौ पौधे, ग्रामीणों को जागरूक किया

हिमाचल में लहराएंगे भोजपत्र के पेड़, जाइका ने किन्नौर में रोपे 1500 पौधे

भास्कर न्यूज | शिमला।

विलुप्त हो रहे दुर्लभ प्रजाति के पौधे भोजपत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना को हिमाचल प्रदेश में पहली बार सफलता मिली है। इस प्रजाति के पौधों की नर्सरी तैयार करने से लेकर पौधरोपण तक के काम में जाइका सफल रही। इस वानिकी परियोजना ने हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला के सहयोग से पहली बार भोजपत्र की नर्सरी तैयार करवाई है। इसका उद्देश्य यही है कि इस दुर्लभ प्रजाति एवं सांस्कृतिक पौधों को पुनः रोपित करके उनके प्राकृतिक स्थलों पर पौधरोपण अभियान के माध्यम से लगाया जा सके।

भोजपत्र की संभावनाओं को देखते हुए जिला किन्नौर में पहली बार 1500 पौधे रोपे गए। वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत तरांडा, निगुलसरी और जानी में क्रमशः पांच-पांच सौ पौधे लगाए गए। इसी कड़ी में वीरवार को वन परिक्षेत्र निचार स्थित भावानगर में एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला के निदेशक प्रभारी डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पितांबर नेगी और तकनीकी अधिकारी ज्वाला सिंह ने भोजपत्र के पौधरोपण से लेकर उनके संरक्षण पर विस्तृत जानकारी दी।

किन्नौर के भावानगर में भोजपत्र के संबंध में जानकारी के लिए आयोजित कार्यशाला में उपस्थित ग्रामीण।

प्रदेश में 30 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य

डॉ. काप्टा जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी-बूटी सैल के निदेशक डॉ. एसके काप्टा ने बताया कि आने वाले समय में इस प्रजाति के पौधों को स्पीति, कुल्लू व अन्य प्राकृतिक स्थलों पर रोपित किया जाएगा। इस प्रयास के तहत परियोजना ने 30 हजार पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना ने पहली बार जिला किन्नौर में 1500 पौधे लगाने में सफलता हासिल की है।

हिमाचल में पहली बार जाइका ने रोपे भोजपत्र के 1500 पौधे

- दुर्लभ प्रजाति भोजपत्र को जिंदा करने में मिली सफलता
- किन्नौर के निचार, तरांडा और जानी में रोपे पांच-पांच सौ पौधे
- ग्रामीणों को कार्यशाला के माध्यम से किया जागरुक

शिमला। विलुप्त हो रही दुर्लभ प्रजाति के पौधे भोजपत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना को सफलता मिली है। हिमाचल प्रदेश में पहली बार इस प्रजाति के पौधों की नर्सरी तैयार करने से लेकर पौधरोपण तक सफलता मिली है। जाइका वानिकी परियोजना ने हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इन्टीच्यूट शिमला के सहयोग से पहली बार भोजपत्र की नर्सरी तैयार करवाई ताकि इस दुर्लभ प्रजाति एवं सांस्कृतिक पौधों को पुनः रोपित कर उनके प्राकृतिक स्थलों पर पौधरोपण अभियान के माध्यम से लगाया जा सके। इस दिशा में जाइका वानिकी परियोजना बेहतरीन कार्य कर रही है। भोजपत्र की संभावनाओं को देखते हुए जिला किन्नौर में पहली बार 15 सौ पौधे रोपे गए। वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत तरांडा, निगुलसरी और जानी में क्रमशः पांच सौ-पांच सौ पौधे भोजपत्र के रोपे गए। बोझ पत्र की संभावना के मद्देनजर वीरवार को वन परिक्षेत्र निचार स्थित भावानगर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इन्टीच्यूट शिमला के निदेशक प्रभारी डा. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. पितांबर नेगी और तकनीकी अधिकारी ज्वाला सिंह ने भोजपत्र के पौधरोपण से लेकर उनके संरक्षण पर विस्तृत जानकारी दी।

प्रदेश में 30 हजार पौधे रोपन का लक्ष्य- डा. काप्टा

जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी-बूटी सैल के निदेशक डा. एसके काप्टा ने बताया कि आने वाले समय में इस प्रजाति के पौधों को स्पीति, कुल्लू तथा अन्य प्राकृतिक स्थलों पर रोपित किया जाएगा। इस प्रयास के तहत परियोजना ने 30 हजार पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना ने पहली बार जिला किन्नौर में 15 सौ पौधे रोपित कर सफलता हासिल की।

हिमाचल में 74वें वण्यप्राणी सप्ताह का आगाज, वण्य जीवों के संरक्षण का संकल्प

- पीसीसीएफ वाइल्ड लाइफ अमिताभ गौतम ने किया विधिवत शुभारंभ
- स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल-2025 का विमोचन, हिमाचल में 83 बर्फानी तेंदुए
- विडियो कांफ्रेंस के माध्यम से सात दिवसीय कार्यक्रमों पर हुई विस्तार से चर्चा

शिमला। हिमाचल प्रदेश में 74वें वण्यप्राणी सप्ताह का आगाज हुआ। पीसीसीएफ वाइल्ड लाइफ अमिताभ गौतम ने वीरवार को इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। ह्यूमन-एनिमल को-एग्जिस्टेंस यानी मानव-जंतु सह अस्तित्व विषय पर आधारित वण्यप्राणि सप्ताह का शुभारंभ करते हुए उन्होंने विडियो कांफ्रेंस के माध्यम से 2 से 8 अक्तूबर यानी सात दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम के बारे प्रदेश के सभी वण्यप्राणी मंडलों के अधिकारियों के साथ विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर प्रदेश में वण्य जीवों के संरक्षण का संकल्प लिया। अमिताभ गौतम ने कहा कि आज के समय में बहुत सी वन्य प्रजातियां लुप्त होती जा रही है जिन्हें बचाने के लिए वन विभाग एवं वण्यप्राणी विंग महत्वपूर्ण कदम उठा रहे है। उन्होंने कहा कि वण्य जीवों के संरक्षण के लिए विभाग के साथ-साथ आम जनमानस को आगे आने की जरूरत है। अमिताभ गौतम ने कहा कि वण्यप्राणी प्रभाग हिमाचल प्रदेश ने नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन बैंगलूरू के साथ मिलकर स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के माध्यम से हिमाचल के 26 हजार 112 वर्ग किलोमीटर फैले क्षेत्र पर बर्फानी तेंदुए की संख्या के बारे रिपोर्ट प्रकाशित की गई। उन्होंने कहा कि इस रिपोर्ट के मुताबिक हिमाचल में लगभग 83 बर्फानी तेंदुए मौजूद है। जो कि वर्ष 2021 में प्रकाशित रिपोर्ट से अधिक है। इस अध्ययन में हिमाचल में पहली बार दो नई वण्य प्रजातियों का पता चला है, जो कि वूल्ली फ्लाइंग सुकेर्ल (woolly flying squirrel) और पल्लास कैट (Pallas cat) है। अमिताभ गौतम ने कहा कि वण्य जीवों के संरक्षण के लिए विभाग के साथ-साथ स्थानीय लोगों को मिलकर कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने विडियो कांफ्रेंस के माध्यम से जुड़े सभी अधिकारियों व स्थानीय लोगों से आग्रह किया कि वण्यप्राणी सप्ताह के माध्यम से आम जनमानस तक वण्य जीवों के संरक्षण का संदेश पहुंचाया जाए।

स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल-2025 का विमोचन

पीसीसीएफ वाइल्डलाइफ अमिताभ गौतम ने स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल प्रदेश-2025 पुस्तिका का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में बर्फानी तेंदुए विलुप्त होते जा रहे हैं, जिन्हें बचाने एवं संरक्षण के लिए वाइल्डलाइफ विंग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि हाल ही में हिमाचल प्रदेश का शीत मरूस्थल क्षेत्र स्पीति युनेस्को के मैन एंड बायोस्फेयर रिजर्व (UNESCO's MAB Network) में शामिल हुआ है, जो हिमाचल के लिए हर्ष का विषय है।

8 अक्तूबर तक इस तरह होंगे महत्वपूर्ण कार्यक्रम

वण्यप्राणी सप्ताह के दौरान 2 से 8 अक्तूबर तक कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। पेंटिंग प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, क्विज, फोटोग्राफी प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, छोटी पैदल यात्रा और बर्ड वॉचिंग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। पीसीसीएफ वाइल्डलाइफ अमिताभ गौतम ने विभाग के अधिकारियों को वण्यप्राणी सप्ताह को प्रदेश के शिक्षण संस्थानों, महिला मंडलों, पंचायतीराज संस्थाओं समेत सभी सरकारी विभागों के साथ मिलकर मनाने के निर्देश दिए।

Snow leopard count in state rises to 83

TRIBUNE NEWS SERVICE

SHIMLA, OCTOBER 3

The population of snow leopards in Himachal Pradesh has increased significantly over the past four years. As per a study conducted by the Himachal Pradesh Wildlife Wing in collaboration with the Nature Conservation Foundation (NCF), Bengaluru, the count of snow leopards rose to 83 in 2025 from 51 in 2021.

"The study also documented the presence of two new wild species in Himachal — woolly flying squirrel and Pallas's cat," said Amitabh Gautam, Principal Chief Conservator of Forests (PCCF), Wildlife, while inaugurating the 74th Wildlife Week here yesterday.

The first official sighting of Pallas's cat was recorded in Kinnaur, and the woolly flying squirrel (Eupetaurus cinereus) was spotted in Lahaul.

The highest density has been recorded in trans-Himalayan regions of Spiti and Pin valleys, upper Kinnaur and Tabo.

The survey, the second after 2021, employed a large-scale camera-trapping exercise across six sites over the 26,000 sq km habitat of snow leopards in the state. The study found that the snow leopard density ranged from 0.16 to 0.53 individuals per 100 sq km. The trans-Himalayan regions of Spiti and Pin valleys, followed by Upper Kinnaur and Tabo, recorded the highest density.

Snow leopards were mostly detected in the protected areas such as the Kibber Wildlife Sanctuary, Great Himalayan National Park, Sechu Tuan Nala Wildlife Sanctuary and the Lippa Asrang Wildlife Sanctuary. Some snow leopards, though, were detected outside the protected areas as well.

The wildlife officials are attributing this increase in the number of snow leopards to a more conducive habitat and better survey methodology as compared to the 2021 study. "Snow leopards showed lesser movement in the second study, which shows the habitat has improved and there is more prey available for them," said Shah Nawaz Bhatt, DFO, Wildlife, Shimla.

Besides, the survey was completed in one year, which also yielded more reliable data. Meanwhile, Gautam said that snow leopards in Himachal were under threat and the Wildlife Wing was playing a key role in their conservation. "Many wild species are on the verge of extinction. The Forest Department, along with the Wildlife Wing, is taking important steps to protect them," he added and urged people to actively participate in wildlife conservation efforts.

रिकांगपिओ में बिकेंगे परियोजना के ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स

- **राजस्व एवं बागवानी मंत्री श्री जगत सिंह नेगी ने किया मल्टीपर्पज आउटलेट का उद्घाटन**
- **मंत्री ने की परियोजना के कार्यों की सराहना**

जाइका वानिकी परियोजना ने जिला किन्नौर के मुख्यालय रिकांगपिओ में मार्केटिंग आउटलैट खोल दिया है। राज्य स्तरीय किन्नौर महोत्सव के अवसर पर 1 नवंबर 2025 को प्रदेश के राजस्व, बागवानी एवं जनजातीय विकास मंत्री श्री जगत सिंह नेगी ने मल्टीपर्पज आउटलेट का लोकार्पण किया। उन्होंने वानिकी परियोजना द्वारा प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में चलाए जा रहे कार्यों की सराहना की। जगत सिंह नेगी ने स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के साथ संवाद कर उनकी आर्थिकी के बारे चर्चा की।

ऐसे में अब रिकांगपिओ में भी जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित सभी तरह के प्राकृतिक उत्पादों की बिक्री होगी। बाते दें कि जाइका वानिकी परियोजना के इस आउटलेट में हिमट्रेडिशन ब्रांड के अंतर्गत किन्नौरी राजमाह, पारंपरिक वस्त्र, चुल्ली का तेल, अखरोट, काला मटर, काला जीरा, कोदे का आटा, ओगले का आटा, फ़ाफ़रे का आटा समेत अन्य ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स ओपन मार्केट से कम दामों में उपलब्ध होंगे। रिकांगपिओ में चल रहे राज्य स्तरीय किन्नौर महोत्सव के बीच जाइका वानिकी परियोजना ने रसायन मुक्त उत्पादों की बिक्री के लिए आउटलेट जनता को समर्पित किया।

जाइका वानिकी परियोजना के परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नंद ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि जाइका से जुड़े स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित सभी प्रकार के उत्पाद बाजार से बेहतरीन और अच्छी कीमत पर उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा कि परियोजना प्रबंधन ने प्रदेश के 22 वन मंडल स्तर पर आउटलैट स्थापित करने का लक्ष्य रखा है, जो अधिकांश वन मंडलों में संचालित हो चुके हैं।

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

नजदीक मिल्कफैड निगम, टुटू शिमला-11 हिमाचल प्रदेश

दूरभाषः 0177.28372172837317/2838217

email: cpdjica2018hpfd@gmail.com https://jicahpforestryproject.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाषः 01902-226636, ई0 मेलः pdjicakullu@gmail.com